



Ayush Rajesh Khaire

19 Jan 2005

12:58 PM

Ahmednagar

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120701301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 19/01/2005
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 12:58:00 घंटे
इष्ट _____: 14:35:52 घटी
स्थान _____: Ahmednagar
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 19:05:00 उत्तर
रेखांश _____: 74:44:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:31:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:26:56 घंटे
वेलान्तर _____: -00:10:44 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:22:06 घंटे
सूर्योदय _____: 07:07:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:16:10 घंटे
दिनमान _____: 11:08:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 05:24:01 मकर
लग्न के अंश _____: 19:43:35 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: शुभ
करण _____: तैतिल
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: अ-अश्विनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
 पिता का नाम _____:
 माता का नाम _____:
 जाति _____:
 गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1926	पौष	29
पंजाबी	संवत : 2061	माघ	7
बंगाली	सन् : 1411	माघ	5
तमिल	संवत : 2061	थई	6
केरल	कोल्लम : 1180	मकरम	6
नेपाली	संवत : 2061	माघ	6
चैत्रादि	संवत : 2061	पौष	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2061	पौष	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 10
 तिथि समाप्ति काल _____: 27:48:50
 जन्म तिथि _____: 10
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: भरणी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:18:54 घंटे
 जन्म योग _____: कृतिका
 सूर्योदय कालीन योग _____: शुभ
 योग समाप्ति काल _____: 17:57:23 घंटे
 जन्म योग _____: शुभ
 सूर्योदय कालीन करण _____: तैतिल
 करण समाप्ति काल _____: 14:50:59 घंटे
 जन्म करण _____: तैतिल
 भयात _____: 09:07:46
 भभोग _____: 66:00:45
 भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 1 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
 तिथि _____: 1-6-11
 दिन _____: रविवार
 नक्षत्र _____: मघा
 योग _____: विष्कुम्भ
 करण _____: बव
 प्रहर _____: 1
 वर्ग _____: सर्प
 लग्न _____: मेष
 सूर्य _____: कर्क
 चन्द्र _____: मेष
 मंगल _____: सिंह
 बुध _____: वृष
 गुरु _____: कन्या
 शुक्र _____: तुला
 शनि _____: मिथुन
 राहु _____: वृश्चिक

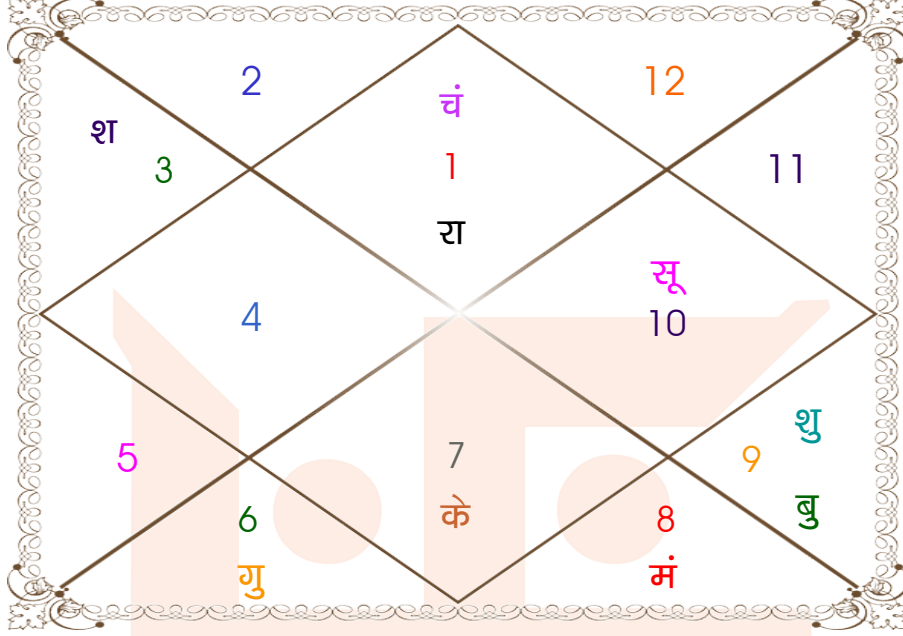


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

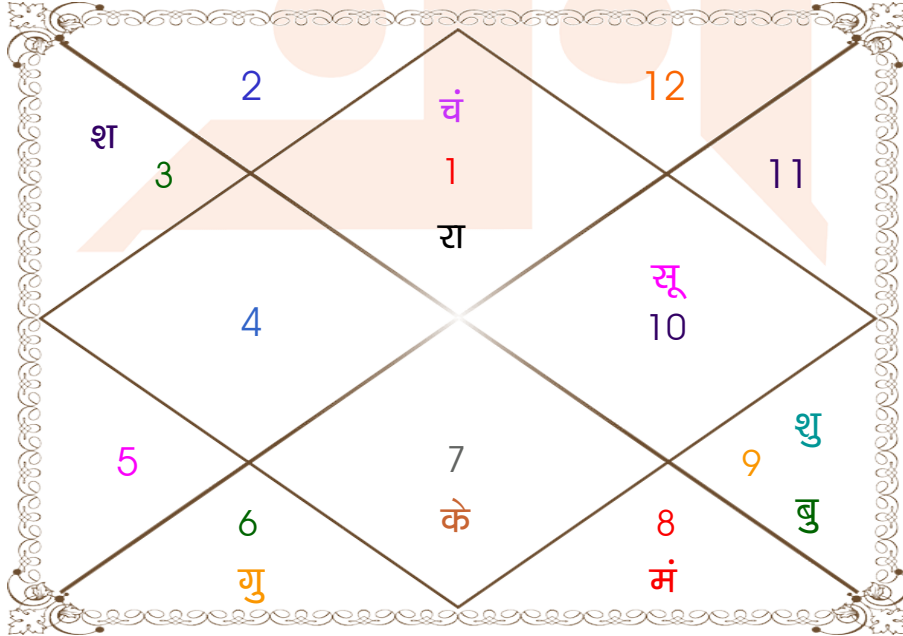


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	रा ल चं		श
सू			
शु बु	मं	के	गु

लग्न कुंडली

	रा ल चं	
श		
		सू
गु	के	मं
		बु शु

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 1मा 29दि
सूर्य

19/01/2005

21/03/2124

सूर्य	20/03/2010
चन्द्र	20/03/2020
मंगल	20/03/2027
राहु	20/03/2045
गुरु	20/03/2061
शनि	20/03/2080
बुध	20/03/2097
केतु	21/03/2104
शुक्र	21/03/2124

योगिनी
उल्का 5वर्ष 1मा 29दि
मंगला

20/03/2025

20/03/2026

मंगला	30/03/2025
पिंगला	19/04/2025
धान्या	20/05/2025
भ्रामरी	29/06/2025
भद्रिका	19/08/2025
उल्का	19/10/2025
सिद्धा	29/12/2025
संकटा	20/03/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



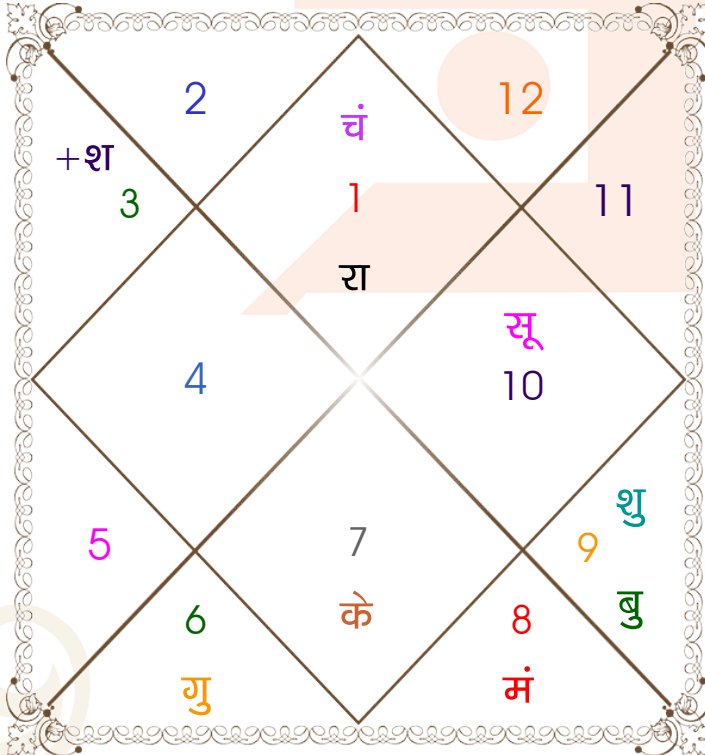
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	19:43:35	409:55:11	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	---
सूर्य			मक	05:24:01	01:01:04	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	28:31:27	12:11:32	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	सम राशि
मंगल			वृश्चि	23:07:02	00:41:51	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	स्वराशि
बुध			धनु	19:11:11	01:29:21	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
गुरु			कन्या	24:38:16	00:02:35	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			धनु	18:06:28	01:15:10	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	सम राशि
शनि	व		मिथु	29:30:48	00:04:54	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
राहु	व		मेष	03:37:03	00:02:24	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	सूर्य	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	03:37:03	00:02:24	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
हर्ष			कुंभ	10:48:15	00:02:57	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	---
नेप			मक	20:33:55	00:02:13	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	29:25:39	00:01:55	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
दशम भाव			मक	09:18:02	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	शुक्र	--

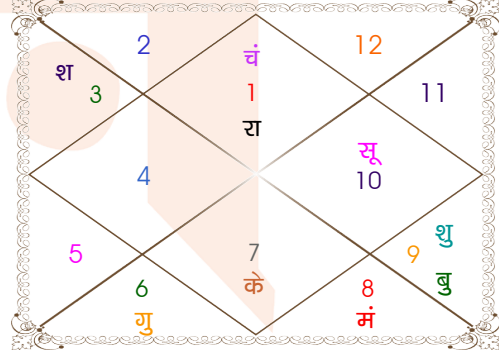
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:55:33

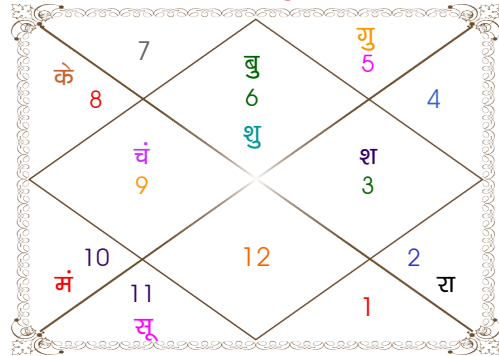
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 02:59:19	मेष 19:43:35
2	वृष 02:59:19	वृष 16:15:04
3	वृष 29:30:48	मिथुन 12:46:33
4	मिथुन 26:02:17	कर्क 09:18:02
5	कर्क 26:02:17	सिंह 12:46:33
6	सिंह 29:30:48	कन्या 16:15:04
7	तुला 02:59:19	तुला 19:43:35
8	वृश्चिक 02:59:19	वृश्चिक 16:15:04
9	वृश्चिक 29:30:48	धनु 12:46:33
10	धनु 26:02:17	मकर 09:18:02
11	मकर 26:02:17	कुम्भ 12:46:33
12	कुम्भ 29:30:48	मीन 16:15:04

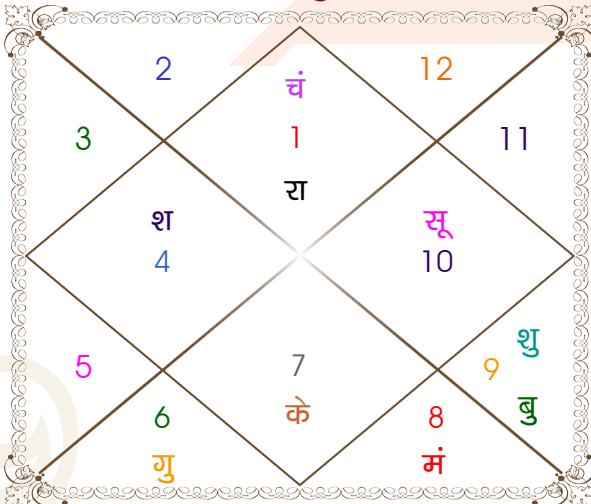
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	19:43:35
2	वृष	18:30:17
3	मिथुन	13:45:44
4	कर्क	09:18:02
5	सिंह	08:22:29
6	कन्या	12:45:38
7	तुला	19:43:35
8	वृश्चिक	18:30:17
9	धनु	13:45:44
10	मकर	09:18:02
11	कुम्भ	08:22:29
12	मीन	12:45:38

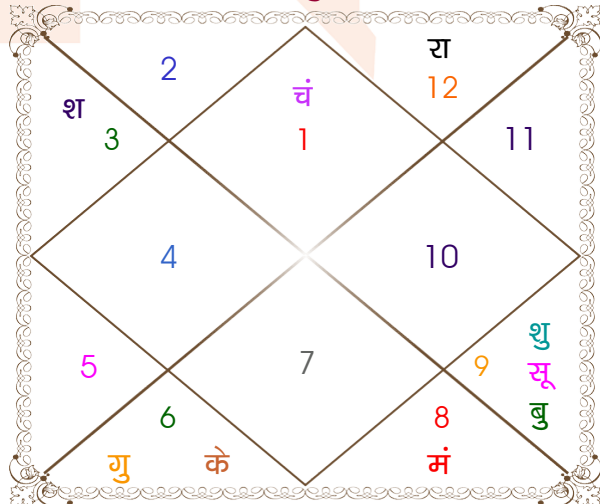
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



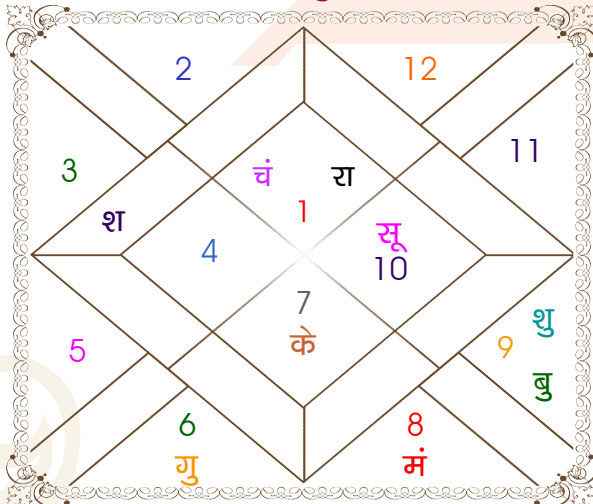
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	खल	निद्रा	1.90	54 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	मृत	निपीदित	निद्रा	4.39	32 %
मंगल	मातृ	भातृ	कुमार	स्वस्थ	निद्रा	4.80	30 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध	शान्त	आगमन	2.86	58 %
गुरु	भातृ	धन	बाल	खल	उपवेशन	3.90	43 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	शान्त	आगमन	4.33	36 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	मुदित	नेत्रपाणि	1.93	41 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	96 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	शान्त	आगमन	0.00	96 %
कुल						24.10	

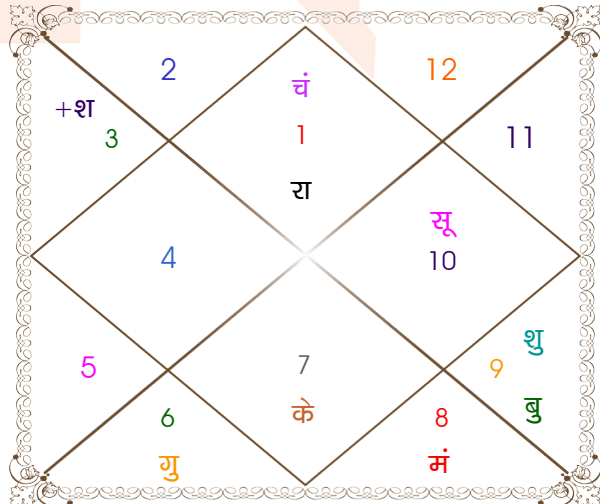
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 1 मास 29 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
19/01/2005	20/03/2010	20/03/2020	20/03/2027	20/03/2045
20/03/2010	20/03/2020	20/03/2027	20/03/2045	20/03/2061
00/00/0000	चंद्र 19/01/2011	मंगल 16/08/2020	राहु 01/12/2029	गुरु 08/05/2047
19/01/2005	मंगल 20/08/2011	राहु 03/09/2021	गुरु 25/04/2032	शनि 18/11/2049
मंगल 14/05/2005	राहु 18/02/2013	गुरु 10/08/2022	शनि 02/03/2035	बुध 24/02/2052
राहु 07/04/2006	गुरु 20/06/2014	शनि 19/09/2023	बुध 19/09/2037	केतु 30/01/2053
गुरु 25/01/2007	शनि 19/01/2016	बुध 15/09/2024	केतु 07/10/2038	शुक्र 01/10/2055
शनि 07/01/2008	बुध 19/06/2017	केतु 11/02/2025	शुक्र 07/10/2041	सूर्य 19/07/2056
बुध 12/11/2008	केतु 18/01/2018	शुक्र 14/04/2026	सूर्य 01/09/2042	चंद्र 18/11/2057
केतु 20/03/2009	शुक्र 19/09/2019	सूर्य 19/08/2026	चंद्र 01/03/2044	मंगल 25/10/2058
शुक्र 20/03/2010	सूर्य 20/03/2020	चंद्र 20/03/2027	मंगल 20/03/2045	राहु 20/03/2061
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
20/03/2061	20/03/2080	20/03/2097	21/03/2104	21/03/2124
20/03/2080	20/03/2097	21/03/2104	21/03/2124	00/00/0000
शनि 23/03/2064	बुध 16/08/2082	केतु 16/08/2097	शुक्र 21/07/2107	सूर्य 08/07/2124
बुध 01/12/2066	केतु 14/08/2083	शुक्र 16/10/2098	सूर्य 20/07/2108	चंद्र 07/01/2125
केतु 10/01/2068	शुक्र 13/06/2086	सूर्य 21/02/2099	चंद्र 21/03/2110	मंगल 20/01/2125
शुक्र 11/03/2071	सूर्य 20/04/2087	चंद्र 22/09/2099	मंगल 21/05/2111	00/00/0000
सूर्य 21/02/2072	चंद्र 18/09/2088	मंगल 18/02/2100	राहु 21/05/2114	00/00/0000
चंद्र 22/09/2073	मंगल 16/09/2089	राहु 09/03/2101	गुरु 19/01/2117	00/00/0000
मंगल 31/10/2074	राहु 04/04/2092	गुरु 13/02/2102	शनि 21/03/2120	00/00/0000
राहु 06/09/2077	गुरु 11/07/2094	शनि 25/03/2103	बुध 20/01/2123	00/00/0000
गुरु 20/03/2080	शनि 20/03/2097	बुध 21/03/2104	केतु 21/03/2124	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 2 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 11/02/2025 14/04/2026	मंगल - सूर्य 14/04/2026 19/08/2026	मंगल - चंद्र 19/08/2026 20/03/2027	राहु - राहु 20/03/2027 01/12/2029	राहु - गुरु 01/12/2029 25/04/2032
शुक्र 23/04/2025 सूर्य 15/05/2025 चंद्र 19/06/2025 मंगल 14/07/2025 राहु 16/09/2025 गुरु 12/11/2025 शनि 18/01/2026 बुध 20/03/2026 केतु 14/04/2026	सूर्य 20/04/2026 चंद्र 01/05/2026 मंगल 08/05/2026 राहु 27/05/2026 गुरु 13/06/2026 शनि 04/07/2026 बुध 22/07/2026 केतु 29/07/2026 शुक्र 19/08/2026	चंद्र 06/09/2026 मंगल 19/09/2026 राहु 21/10/2026 गुरु 18/11/2026 शनि 22/12/2026 बुध 21/01/2027 केतु 02/02/2027 शुक्र 10/03/2027 सूर्य 20/03/2027	राहु 15/08/2027 गुरु 25/12/2027 शनि 29/05/2028 बुध 16/10/2028 केतु 12/12/2028 शुक्र 26/05/2029 सूर्य 14/07/2029 चंद्र 04/10/2029 मंगल 01/12/2029	गुरु 28/03/2030 शनि 13/08/2030 बुध 16/12/2030 केतु 05/02/2031 शुक्र 01/07/2031 सूर्य 14/08/2031 चंद्र 26/10/2031 मंगल 16/12/2031 राहु 25/04/2032
राहु - शनि 25/04/2032 02/03/2035	राहु - बुध 02/03/2035 19/09/2037	राहु - केतु 19/09/2037 07/10/2038	राहु - शुक्र 07/10/2038 07/10/2041	राहु - सूर्य 07/10/2041 01/09/2042
शनि 07/10/2032 बुध 04/03/2033 केतु 03/05/2033 शुक्र 24/10/2033 सूर्य 15/12/2033 चंद्र 12/03/2034 मंगल 11/05/2034 राहु 14/10/2034 गुरु 02/03/2035	बुध 12/07/2035 केतु 04/09/2035 शुक्र 07/02/2036 सूर्य 24/03/2036 चंद्र 10/06/2036 मंगल 03/08/2036 राहु 21/12/2036 गुरु 24/04/2037 शनि 19/09/2037	केतु 11/10/2037 शुक्र 14/12/2037 सूर्य 02/01/2038 चंद्र 03/02/2038 मंगल 25/02/2038 राहु 24/04/2038 गुरु 14/06/2038 शनि 14/08/2038 बुध 07/10/2038	शुक्र 08/04/2039 सूर्य 02/06/2039 चंद्र 01/09/2039 मंगल 04/11/2039 राहु 16/04/2040 गुरु 09/09/2040 शनि 02/03/2041 बुध 04/08/2041 केतु 07/10/2041	सूर्य 23/10/2041 चंद्र 20/11/2041 मंगल 09/12/2041 राहु 27/01/2042 गुरु 12/03/2042 शनि 03/05/2042 बुध 19/06/2042 केतु 08/07/2042 शुक्र 01/09/2042
राहु - चंद्र 01/09/2042 01/03/2044	राहु - मंगल 01/03/2044 20/03/2045	गुरु - गुरु 20/03/2045 08/05/2047	गुरु - शनि 08/05/2047 18/11/2049	गुरु - बुध 18/11/2049 24/02/2052
चंद्र 16/10/2042 मंगल 17/11/2042 राहु 07/02/2043 गुरु 21/04/2043 शनि 17/07/2043 बुध 03/10/2043 केतु 04/11/2043 शुक्र 03/02/2044 सूर्य 01/03/2044	मंगल 24/03/2044 राहु 20/05/2044 गुरु 10/07/2044 शनि 09/09/2044 बुध 03/11/2044 केतु 25/11/2044 शुक्र 28/01/2045 सूर्य 16/02/2045 चंद्र 20/03/2045	गुरु 02/07/2045 शनि 02/11/2045 बुध 21/02/2046 केतु 07/04/2046 शुक्र 15/08/2046 सूर्य 23/09/2046 चंद्र 27/11/2046 मंगल 11/01/2047 राहु 08/05/2047	शनि 02/10/2047 बुध 10/02/2048 केतु 04/04/2048 शुक्र 05/09/2048 सूर्य 21/10/2048 चंद्र 06/01/2049 मंगल 01/03/2049 राहु 18/07/2049 गुरु 18/11/2049	बुध 16/03/2050 केतु 03/05/2050 शुक्र 18/09/2050 सूर्य 29/10/2050 चंद्र 06/01/2051 मंगल 24/02/2051 राहु 28/06/2051 गुरु 16/10/2051 शनि 24/02/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल
24/02/2052	30/01/2053	01/10/2055	19/07/2056	18/11/2057
30/01/2053	01/10/2055	19/07/2056	18/11/2057	25/10/2058
केतु 15/03/2052	शुक्र 12/07/2053	सूर्य 16/10/2055	चंद्र 29/08/2056	मंगल 08/12/2057
शुक्र 11/05/2052	सूर्य 29/08/2053	चंद्र 09/11/2055	मंगल 26/09/2056	राहु 28/01/2058
सूर्य 28/05/2052	चंद्र 18/11/2053	मंगल 26/11/2055	राहु 09/12/2056	गुरु 15/03/2058
चंद्र 26/06/2052	मंगल 14/01/2054	राहु 09/01/2056	गुरु 11/02/2057	शनि 08/05/2058
मंगल 15/07/2052	राहु 09/06/2054	गुरु 17/02/2056	शनि 30/04/2057	बुध 25/06/2058
राहु 05/09/2052	गुरु 17/10/2054	शनि 03/04/2056	बुध 08/07/2057	केतु 15/07/2058
गुरु 20/10/2052	शनि 20/03/2055	बुध 15/05/2056	केतु 05/08/2057	शुक्र 10/09/2058
शनि 13/12/2052	बुध 05/08/2055	केतु 01/06/2056	शुक्र 25/10/2057	सूर्य 27/09/2058
बुध 30/01/2053	केतु 01/10/2055	शुक्र 19/07/2056	सूर्य 18/11/2057	चंद्र 25/10/2058
गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र
25/10/2058	20/03/2061	23/03/2064	01/12/2066	10/01/2068
20/03/2061	23/03/2064	01/12/2066	10/01/2068	11/03/2071
राहु 06/03/2059	शनि 10/09/2061	बुध 09/08/2064	केतु 25/12/2066	शुक्र 20/07/2068
गुरु 01/07/2059	बुध 13/02/2062	केतु 05/10/2064	शुक्र 02/03/2067	सूर्य 16/09/2068
शनि 17/11/2059	केतु 18/04/2062	शुक्र 18/03/2065	सूर्य 22/03/2067	चंद्र 22/12/2068
बुध 20/03/2060	शुक्र 18/10/2062	सूर्य 06/05/2065	चंद्र 25/04/2067	मंगल 27/02/2069
केतु 10/05/2060	सूर्य 12/12/2062	चंद्र 27/07/2065	मंगल 19/05/2067	राहु 20/08/2069
शुक्र 03/10/2060	चंद्र 13/03/2063	मंगल 23/09/2065	राहु 18/07/2067	गुरु 21/01/2070
सूर्य 16/11/2060	मंगल 16/05/2063	राहु 17/02/2066	गुरु 10/09/2067	शनि 23/07/2070
चंद्र 28/01/2061	राहु 28/10/2063	गुरु 28/06/2066	शनि 13/11/2067	बुध 03/01/2071
मंगल 20/03/2061	गुरु 23/03/2064	शनि 01/12/2066	बुध 10/01/2068	केतु 11/03/2071
शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु
11/03/2071	21/02/2072	22/09/2073	31/10/2074	06/09/2077
21/02/2072	22/09/2073	31/10/2074	06/09/2077	20/03/2080
सूर्य 29/03/2071	चंद्र 10/04/2072	मंगल 15/10/2073	राहु 06/04/2075	गुरु 08/01/2078
चंद्र 27/04/2071	मंगल 13/05/2072	राहु 15/12/2073	गुरु 22/08/2075	शनि 03/06/2078
मंगल 17/05/2071	राहु 08/08/2072	गुरु 07/02/2074	शनि 03/02/2076	बुध 12/10/2078
राहु 08/07/2071	गुरु 24/10/2072	शनि 12/04/2074	बुध 30/06/2076	केतु 05/12/2078
गुरु 23/08/2071	शनि 24/01/2073	बुध 08/06/2074	केतु 29/08/2076	शुक्र 09/05/2079
शनि 17/10/2071	बुध 16/04/2073	केतु 02/07/2074	शुक्र 19/02/2077	सूर्य 24/06/2079
बुध 05/12/2071	केतु 19/05/2073	शुक्र 07/09/2074	सूर्य 12/04/2077	चंद्र 09/09/2079
केतु 25/12/2071	शुक्र 24/08/2073	सूर्य 28/09/2074	चंद्र 08/07/2077	मंगल 02/11/2079
शुक्र 21/02/2072	सूर्य 22/09/2073	चंद्र 31/10/2074	मंगल 06/09/2077	राहु 20/03/2080



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

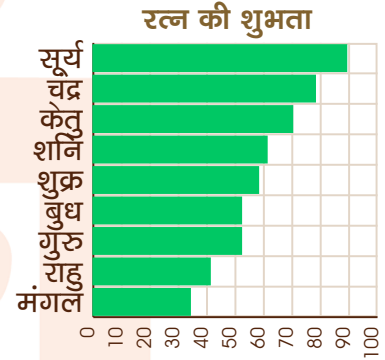
मूलांक	1
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	70%	दम्पति, भाग्योदय
नीलम	शनि	61%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
हीरा	शुक्र	58%	भाग्योदय, धन, दम्पति
पन्ना	बुध	52%	भाग्योदय, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	41%	रोग, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	34%	दुर्घटना, रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	20/03/2010	100%	84%	46%	52%	58%	41%	47%	16%	58%
चंद्र	20/03/2020	95%	91%	34%	58%	52%	58%	61%	16%	58%
मंगल	20/03/2027	95%	84%	54%	28%	58%	58%	61%	16%	77%
राहु	20/03/2045	77%	66%	9%	52%	52%	64%	67%	58%	58%
गुरु	20/03/2061	95%	84%	46%	28%	64%	41%	61%	41%	70%
शनि	20/03/2080	77%	66%	9%	58%	52%	64%	73%	52%	58%
बुध	20/03/2097	95%	66%	34%	64%	52%	64%	61%	41%	70%
केतु	21/03/2104	77%	66%	46%	52%	52%	64%	47%	16%	83%
शुक्र	21/03/2124	77%	66%	34%	58%	52%	70%	67%	52%	77%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य व मोती रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, नीलम, हीरा, पन्ना एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षेत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त

होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मान, महत्वाकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः

काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दंपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। कर्मेश शनि का रत्न नीलम आपके कार्यक्षेत्र की समस्याओं का निवारण कर सकता है। यह रत्न आपकी योग्यता के अनुसार सफलता दिला सकता है। आत्मबल और मनोबल की वृद्धि कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम रत्न आपके कार्य क्षेत्र को अनुकूल कर आपको उन्नति और विकास के अवसर प्राप्त करने में सहयोग करेंगे। शनि आयेश भी है इसलिए शनि रत्न नीलम धारण करने से आपकी आजीविका और आय दोनों क्षेत्रों से सुखद परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप आय और कार्यक्षेत्र को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश का स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बना सकते हैं। हीरा रत्न धारण

करने से आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तमेश का रत्न होने के कारण हीरा रत्न आपको कुटुम्ब से सुखी और विदेश स्थानों से लाभ दिला सकता है। शुक्र रत्न आपको पारिवारिक सुख के साथ धन संचय का सुख भी दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध का रत्न पन्ना आपके लेखन, वाक्पटुता, चातुर्य एवं शिल्प कलाओं में निपुणता दे सकता है। अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी पन्ना रत्न की शक्तियों से आपको शारीरिक मेहनत कम और बौद्धिक योग्यता का प्रयोग अधिक करना होगा। पराक्रमेश का रत्न होने के कारण पन्ना आपके विवेक, व्यवहार कुशलता का विकास कर सकता है। बुध के सभी फल प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। यह रत्न आपको बुध ग्रह की शुभता प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को अच्छा रख, आपको निरोगी बनायेगा। आप मधुरभाषी और सदाचारी बनेंगे। रत्न धारण से आप पराक्रमी, विवेकवान और उदार बनेंगे। एवं रत्न शुभता से आप अच्छे कर्म करने वाले, लोकमान्य और प्रतापी बनेंगे। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शत्रुहंता और अजात शत्रु होंगे। यह रत्न आपको वाद-विवाद में भी विजयी करेगा। पुखराज शुभता से भाई-बहनों और मामा सुख मिलेगा। रत्न प्रभाव से आपको अच्छे नौकर चाकर मिलेंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते हैं। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे हैं तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण से आपका स्वभाव संशययुक्त हो सकता है। आपको बेवजह शक करने की आदत हो सकती है। अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा

समझने का भ्रम आपको हो सकता है। हर व्यक्ति का अपने निर्देशानुसार आचरण करना आपको पसंद होगा। अत्यधिक चातुर्य का प्रयोग आपके पारिवारिक संबंधों में मधुरता की कमी ला सकता है। महत्वाक्षाओं की पूर्ति हेतु आपके द्वारा गलत साधनों का चयन हो सकता है। इस रत्न से परोपकार, दया और धैर्य जैसे शुभ भावों की कमी आपके स्वभाव में आ सकती है। आगे बढ़ने के लिए अनुचित कार्य करना भी आपको नीतिगत लग सकता है।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपका अपना ससुराल पक्ष से संबंध खराब हो सकते हैं। यह रत्न आपको बहुत अनुकूल परिणाम नहीं दे पाएगा। रत्न धारण करने पर शुभचिंतकों के द्वारा भी आपका भला नहीं हो पाएगा। रत्न धारण करने पर संभव है कि कानून नियमों के अन्तर्गत रहकर आप अपना जीवनयापन न कर पायें। मूंगा रत्न आपको गुदा संबंधित रोग दे सकता है। रत्न के कारण आपके शरीर में फोड़े फुंसी या घाव होने के योग भी बन सकते हैं। मूंगा धारण करने पर आपको दुर्घटनाओं, आग और चोरी की वजह से धन हानि हो सकती है। यह रत्न आपको वाणी में कड़वाहट दे सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। मंगल अष्टमेश होकर आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। अतः इस ग्रह का रत्न मूंगा धारण करने से आपमें आत्मशक्ति की कमी होगी। चोट, दुर्घटनाओं की स्थिति यदा-कदा बन सकती है। माता, भूमि, भवन एवं जीवन साथी के लिए कुछ परेशानियां देकर सुख की कमी हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके स्वभाव में हठ व रोब से काम कराने की प्रवृत्ति दे सकता है। रक्तविकार, रक्तचाप एवं पित्त रोग इत्यादि रोग आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकते हैं। मूंगा रत्न आपमें क्रोध की अधिकता ला सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें ज्ञान योग्यता से कम हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल

(20/03/2020 - 20/03/2027)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(20/03/2027 - 20/03/2045)

राहु की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मोती, हीरा, गोमेद, लहसुनिया, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(20/03/2045 - 20/03/2061)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, हीरा, गोमेद व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(20/03/2061 - 20/03/2080)

शनि की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मोती, हीरा, पन्ना, लहसुनिया, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है

क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(20/03/2080 - 20/03/2097)

बुध की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती, पन्ना, हीरा, नीलम व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(20/03/2097 - 21/03/2104)

केतु की दशा में आपका लहसुनिया व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, हीरा, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(21/03/2104 - 21/03/2124)

शुक्र की दशा में आपका माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, नीलम, मोती, पन्ना, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ॐ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

गुरु आपके छोटे भाव में हैं, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित हैं। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़तेरी हो रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

सुख हानि
दुर्घटना
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कृष्टरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव विद्यमान रहता है। जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। इनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा कठिन से कठिन कार्य में वे परिश्रम करके सफलता प्राप्त करते हैं।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा निर्भय होकर जीवन में अपने सांसारिक महत्व के समस्त कार्य कलापों को सम्पन्न करके उसमें वांछित सफलता अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपको इच्छित सम्मान एवं प्रसिद्धि प्राप्त होगी। आप में स्वाभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से ही आप उच्च पद एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आप में स्वभाव से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा फलतः यदा कदा क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे परन्तु अनावश्यक क्रोध के प्रदर्शन से आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है अतः क्रोध पर आपको यत्नपूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए। जीवन में आपकी उन्नति जन्म स्थान के अतिरिक्त अन्य स्थान में होगी तथा वहीं आपको इच्छित सम्मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि मिलेगी एवं समाज में एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप स्थापित होंगे। साथ ही धनैश्वर्य एवं वैभव से आप सम्पन्न रहेंगे तथा सुख पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सुन्दर एवं स्वरूप दर्शनीय होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति उदार होगी तथा अन्य जनों की आप समय समय पर सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। यद्यपि आपका व्यक्तित्व पूर्ण आकर्षक रहेगा तथापि शरीर में किंचित स्थूलता हो सकती है शारीरिक बल से आप पूर्ण सम्पन्न होंगे तथा बौद्धिक एवं शारीरिक परिश्रम करने में समर्थ होंगे जिससे आपके सभी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो जाएंगे। साथ ही स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप इच्छित सुख वैभव एवं धन धान्य अर्जित करके जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे।

इस प्रकार आप बलवान सुन्दर साहसी परिश्रमी एवं स्वयोग्यता से जीवन में मान प्रतिष्ठा तथा धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरुष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्टान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत में आप इसे प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जायेंगे।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगे एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः जीवन में हार कम ही मानेंगे। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगे।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्दरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगे तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृत्ति होने के कारण सामंजस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगे। इससे आपके संबंधों में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुख में अवश्य उनका साथ देंगे। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रुचि अल्प मात्रा में ही रखेंगे फलतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगे ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रुचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक व्यक्ति होंगे तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगे क्योंकि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी व्यक्ति हैं। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगे।

जीवन में आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगे। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोनों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगे। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनो, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगे तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया तुला राशि की सप्तम भाव में स्थिति के फलस्वरूप जातक का सहयोगी चंचल धनवान एवं भ्रमण प्रिय होता है परन्तु यह वायुतत्व राशि होने से सौम्यता एवं गंभीरता का भाव भी बना रहता है तथा केतु के प्रभाव से वह तेजस्वी पराक्रमी एवं साहस आदि गुणों से सुसम्पन्न होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा लेकिन साहस एवं पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्य कलापों में वह निपुण होगी तथा बुद्धिमता पूर्वक वे अपने कार्यों को पूर्ण करेंगी। वह कर्तव्य परायण महिला होगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए सजग रहेंगी परन्तु केतु के प्रभाव से यदा कदा स्वार्थ की भावना का मन में उदय होगा जिससे वे अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर सकती है।

आपकी पत्नी का लालिमा लिए गौरवर्ण होगा एवं कद भी सामान्य रहेगा। तुला राशि के प्रभाव से सौन्दर्य में आकर्षण रहेगा तथा स्वयं भी इसका आकर्षण बनाएं रखने के लिए सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करेंगी शारीरिक सुडौलता तथा पुष्टता बनाएं रखने के लिए वह व्यायाम या योगादि क्रियाएं भी सम्पन्न कर सकती है। इसके प्रभाव से शारीरिक आकर्षण बना रहेगा जिससे उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व कोई संबंध भी टूट सकता है। आपका विवाह विज्ञापन द्वारा या अपनी इच्छा से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद यद्यपि आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा परन्तु केतु के प्रभाव से आपस में अनावश्यक वाद विवाद के कारण समस्याएं उत्पन्न होंगी एवं संबंधों में तनाव आएगा। लेकिन यदि आप दोनों बुद्धिमता पूर्वक कार्य ले तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करें तो इसमें मधुरता का समावेश हो सकता है तथा शांति पूर्वक आपका जीवन व्यतीत हो सकेगा अतः संयम से परस्पर व्यवहार करें।

आपका विवाह सामान्य धनी एवं प्रतिष्ठित परिवार से सम्पन्न होगा एवं विवाह के समय ससुराल से आपको वांछित धन सम्पत्ति या दहेज की प्राप्ति नहीं होगी। लेकिन सास ससुर से सामान्य एवं मधुर संबंध स्थापित करने में आपको सफलता मिलेगी तथा वे भी आपका आदर तथा सम्मान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का व्यवहार अनुकूल नहीं रहेगा तथा सुख दुख में वे उनकी यथोचित सेवा कम ही करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने स्वभाव से असन्तुष्ट रखेंगी तथा वे भी उनको वांछित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे जिससे उनके कारण परिवार में सुख शांति की न्यूनता रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इससे आपको

हानि एवं अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी साथ ही मानसिक तनाव भी बना रहेगा। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यवसाय श्रम साध्य होने के साथ साथ बुद्धि एवं मानसिक क्रिया से सम्पन्न होगा। सूर्य की शत्रु राशि में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा कार्य क्षेत्र में अनावश्यक व्यवधान भी उत्पन्न होंगे परन्तु अपने तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वभाव से आप वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे।

जीविका की दृष्टि से आपके लिए सरकारी सेवा, औषधि विज्ञान, वैद्य, डाक्टर तथा प्रतियोगी परीक्षा द्वारा प्राप्त प्रशासकीय सेवा अनुकूल रहेगी। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी आपको वांछित सफलता एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। अतः आपको अपनी आजीविका का क्षेत्र उपरोक्त विभागों में ही चयन करना चाहिए। इससे आपको सतत सफलता मिलती रहेगी एवं मन में भी सन्तुष्टि भाव विद्यमान रहेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में दवाओं का व्यापार, ऊनी वस्त्र, धी, गुड़, चीनी तथा रत्न संबंधी कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होगा तथा किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। जिससे मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

पंचमेश सूर्य की दशमभाव में स्थित के प्रभाव से अपने कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली एवं आदरणीय माने जाएंगे तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आपको किसी उच्च एवं आधिकारिक पद की प्राप्ति भी होगी लेकिन इसमें किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः ऐसे में आपको किसी भी प्रकार की शीघ्रता या अशांति का अनुभव नहीं करना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। व्यापार में भी आप आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त करके उच्चस्तर पर स्थापित होने में समर्थ होंगे।

आपके पिता तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने क्षेत्र में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके परस्पर संबंध सामान्यतया अच्छे रहेंगे परन्तु सूर्य की शत्रु राशि में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन इसका प्रभाव अल्प काल के लिए ही होगा तथा सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे। सूर्य के त्रिकोणपति के प्रभाव से पिता से आपको आवश्यक धन सम्पत्ति सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे परन्तु अपनी ओर से आप उन्हें अपेक्षित सहयोग प्रदान अल्प मात्रा में ही करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि चतुर्थ स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा कार्य व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। व्यापार में बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। इस समय के अंतराल में कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो 14 मई के बाद लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगा जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्न आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रहा है। 30 मई के बाद राहु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है उस समय आपको अचानक धन लाभ होगा जिससे आपको पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 14 मई के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए कोई संस्था का संचालन भी कर सकते हैं।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगा। 14 मई के बाद दूसरी संतान के लिए समय बहुत उत्तम है।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं। तो गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

29 मार्च से समय बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलने का प्रबल योग बन रहा है। गुरु के गोचर के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करेंगे एवं तीर्थ यात्रा कर



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पुण्यार्जन भी करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।
- नित्य प्रति हनुमान चालीस का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक व्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्य में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राएं होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(20/03/2020 - 20/03/2027)

मंगल की महादशा को 20/03/2020 आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 20/03/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको लाभ, इच्छाओं की पूर्ति तथा भौतिक समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ और पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की संभावना है।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवनी शक्ति और उत्साह होगा। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप में आवश्यक कर्मशक्ति तथा ऊर्जा होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपका स्वास्थ्य एक सीमा तक प्रभावित हो सकता है। आँख तथा मूत्राशय संबंधी समस्याओं, सरदर्द, ज्वर आदि की सम्भावना है। कुछ घाव तथा चोट आ सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनोपार्जन अपने प्रयासों से करेंगे। पैतृक सम्पत्ति, तथा ट्रस्ट से आय, बोनस या अवकाश ग्रहण से लाभ की सम्भावना है। आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको कहीं से अचानक धन की प्राप्ति होगी। जीविका के लिए सशस्त्र सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य, लोहा-इस्पात से सम्बन्धित व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, समुद्री उत्पाद, कुटीर उद्योग आदि का व्यापार उत्तम होगा। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की छोटी यात्राएं होंगी, उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका चिर प्रतीक्षित स्थानान्तरण या परिवर्तन होगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि होगी। हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में उन्नति होगी और आय में वृद्धि होगी। अप्रत्याशित परिवर्तन तथा विकास की सम्भावना है जो अन्ततः लाभदायक होगा। मार्केटिंग तथा जन-सम्पर्क कौशल उत्तम होगा और आप अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा करेंगे।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको वाहन तथा पारिवारिक सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लम्बी यात्राएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। सम्पत्ति की दृष्टि से यह एक उत्तम दशा है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकता है। विज्ञान, लेखा, र्थतिका, गणित आदि में आपकी रुचि होगी। आपका शोध की ओर झुकाव होगा और आप इस दशा के दौरान अपनी

परियोजना पूरी करेंगे। आपकी खेलों तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में रुचि होगी। उच्च शिक्षा के लिए यह दशा उत्तम है। आपका दाखिला आपकी पसन्द की संस्थाओं में होगा।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की आय और लाभ में वृद्धि होगी। आपको आपके जीवन साथी से लाभ होगा। जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिए निवेश व सद्दा लाभदायक तथा समृद्धिदायक होगा। आपके पिता का अच्छे कार्य में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और साझीदारी में लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी, कार्य स्थान में स्थिति सुधरेगी और स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति में सुधार होगा। आपके बड़े भाई-बहनों के कार्यों में कुछ परिवर्तन होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति बहुत होगी और आपका खिंचाव पर विज्ञान की ओर होगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। इसके बाद आने वाली राहु दशा के कारण कुछ समस्याएं आएंगी। गुरु आराम व सुख देगा और आपका विवाह भी हो सकता है। शनि के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होंगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश और ख्याति, सम्पत्ति, समृद्धि, उच्च प्रतिष्ठा तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। केतु कुछ तनाव उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको आराम, विलासिता, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी जबकि सूर्य के कारण लम्बी यात्राएं होंगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(15/09/2024 - 11/02/2025)**

आपके लिए मंगल की महादशा 20/03/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/09/2024 को प्रारंभ होकर 11/02/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। विवाह हो सकता है। आप बहुत लोगों की मदद करेंगे। कोई भी निर्णय लेने से पहले गहराई से विचार करेंगे। अध्यात्म और ज्ञानार्जन में रुचि होगी। उच्चपद मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी के सम्मान और पद में वृद्धि होगी। आपके पिता को हर प्रकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, लोकप्रियता मिलेगी। आपकी माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; वे प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा; मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके पिता से मधुर संबंध रहेंगे।

आपकी संतान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प का परिचय देगी। अगर से सेवारत हैं तो धनी बनेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ के अवसर मिलेंगे। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। उदरशूल आदि की शिकायत हो सकती है। इस पर गंभीरता से ध्यान दें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल और सतनजे का दान दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(11/02/2025 - 14/04/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 20/03/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 11/02/2025 को प्रारंभ होकर 14/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप जीवनसाथी, संतान और मित्रों से सुख पाएंगे। प्रसिद्धि और धन का संकेत है। कुछ यात्राएं हो सकती हैं। सरकार से सहयोग मिलेगा। ज्ञानार्जन के लिए समय शुभ है। विज्ञापन जगत में सफलता मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। ललित कला, नाटक आदि में रुचि होगी। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चपद, धन और सुखद घरेलू जीवन का संकेत है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, विवाह हो सकता है, विभिन्न साधनों से धनलाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी ; परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो धनी बनेंगे; निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे; सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(14/04/2026 - 19/08/2026)

आपकी मंगल की महादशा 20/03/2020 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 14/04/2026 को प्रारंभ होकर 19/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि-भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। भाई-बहनों को अप्रत्याशित लाभ, विरासत या बीमे से धन प्राप्ति के संकेत हैं।

आपकी संतान शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगी, उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो औषधि और खाद्य सामग्री से संबंधित कार्यों में सफलता संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद, धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

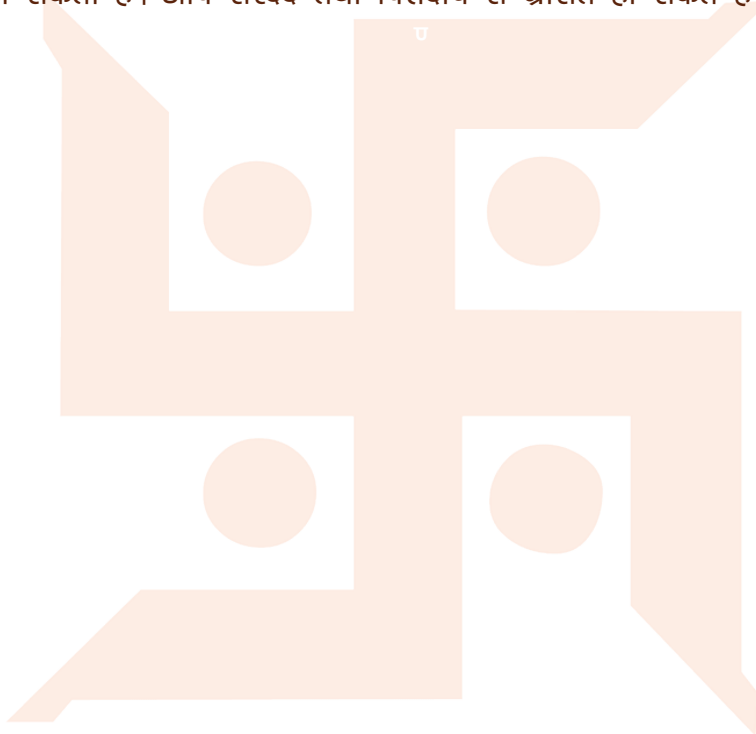
आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार, थकान आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

**महादशा :- राहु
(20/03/2027 - 20/03/2045)**

राहु की महादशा 20/03/2027 को आरम्भ और 20/03/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में



परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा

उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(20/03/2027 - 01/12/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/03/2027 को प्रारंभ होकर 20/03/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 20/03/2027 को प्रारंभ होकर 01/12/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(01/12/2029 - 25/04/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/03/2027 को प्रारंभ होकर 20/03/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 01/12/2029 को प्रारंभ होकर 25/04/2032 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से

धोकर तर्जनी में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com